Rajasthan RSSB Assistant Professor (Hindi Sample Paper)

Q1. संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकाशित होता है, उसे क्या कहते हैं?
(a) विकृत अव्यय
(b) कारक
(c) सम्बन्धसूचक
(d) क्रियाविशेषण
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) कारक
Introduction: व्याकरण की दृष्टि से 'कारक' (Case) वह तत्व है जो वाक्य के पदों को आपस में जोड़कर उन्हें अर्थपूर्ण बनाता है। संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ जो संबंध होता है, उसे कारक कहा जाता है। बिना कारक चिह्नों (विभक्तियों) के वाक्य की संरचना अस्पष्ट और अर्थहीन रह जाती है।
Information Booster: हिंदी में आठ कारक माने गए हैं: कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण और संबोधन। उदाहरण के लिए, "राम ने रावण को बाण से मारा" वाक्य में 'ने', 'को', और 'से' कारक चिह्न हैं जो राम (संज्ञा) का संबंध क्रिया (मारा) और अन्य पदों से स्पष्ट कर रहे हैं। इन्हें 'परसर्ग' भी कहा जाता है।
Additional Knowledge: कारकों का सही प्रयोग भाषा की स्पष्टता के लिए अनिवार्य है। संस्कृत में जहाँ विभक्तियाँ शब्दों के साथ जुड़ी होती थीं, वहीं हिंदी में ये स्वतंत्र रूप से (परसर्ग के रूप में) प्रयुक्त होती हैं। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूपांतर से क्रिया के साथ उसका संबंध जाना जाता है, वही भाषा की व्याकरणिक इकाई 'कारक' कहलाती है।

Q2. संविधान के अनुच्छेद 350 (क) में किसका उल्लेख हुआ है?
(a) राज भाषा आयोग का गठन
(b) हिंदी की व्यापकता हेतु राजकीय प्रयत्न
(c) एक विशेष पदाधिकारी की नियुक्ति
(d) प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ
Ans.(d)
Sol. सही उत्तर: (d) प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ
परिचय: भारतीय संविधान के भाग 17 में राजभाषा संबंधी प्रावधान हैं। अनुच्छेद 350 (क) भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के हितों की रक्षा करता है।
इन्फॉर्मेशन बूस्टर: इस अनुच्छेद के अनुसार, प्रत्येक राज्य यह प्रयास करेगा कि भाषाई अल्पसंख्यक समूहों के बच्चों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर उनकी 'मातृभाषा' में शिक्षा दी जाए।
अतिरिक्त ज्ञान: अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और विकास के लिए केंद्र सरकार के कर्तव्यों का उल्लेख करता है।

Q3. देवनागरी लिपि में अधिकतः कौन-सी लिपि है?
विकल्प:
(a) वर्णनात्मक
(b) प्रतीकात्मक
(c) चित्रात्मक
(d) वर्णात्मक
Ans.(d)

Sol. सही उत्तर: (D) वर्णात्मक (अक्षरात्मक)
विस्तृत व्याख्या: देवनागरी लिपि की प्रकृति वर्णात्मक या अधिक सटीक रूप में 'अक्षरात्मक' (Syllabic) है। इसका अर्थ यह है कि इसमें प्रत्येक व्यंजन में स्वर (अ) अंतर्निहित होता है (जैसे 'क' वास्तव में 'क्+अ' है)। रोमन लिपि 'वर्णमालात्मक' (Alphabetic) होती है जहाँ स्वर और व्यंजन अलग-अलग लिखे जाते हैं। देवनागरी की वैज्ञानिकता यह है कि यह जैसा बोली जाती है, वैसी ही लिखी जाती है। यहाँ 'वर्णात्मक' शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है जो देवनागरी के सुव्यवस्थित वर्ण-क्रम को दर्शाता है।

Q4. निम्नलिखित बोली-वर्गों को उनसे संबद्ध बोलियों के साथ सुमेलित कीजिये:

सूची-I (वर्ग)	सूची-II (बोली)
(A) पश्चिमी हिंदी	(1) मेवाती
(B) पूर्वी हिंदी	(2) बुंदेली
(C) बिहारी हिंदी	(3) बघेली
(D) राजस्थानी	(4) मगही

विकल्प (Options):
(a) A-1, B-2, C-3, D-4
(b) A-2, B-3, C-4, D-1
(c) A-3, B-4, C-1, D-2
(d) A-4, B-1, C-2, D-3
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) A-2, B-3, C-4, D-1
व्याख्या:
प्रस्तावना (Introduction): हिंदी एक विशाल भाषा समूह है जिसमें 5 उपभाषाएँ और 17-18 बोलियाँ शामिल हैं। इनका वर्गीकरण उनके उद्भव (अपभ्रंश) के आधार पर किया गया है।
नॉलेज बूस्टर (Knowledge Booster):
पश्चिमी हिंदी (बुंदेली): यह शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है। इसमें बुंदेली के अलावा खड़ी बोली, ब्रज, कन्नौजी और हरियाणवी शामिल हैं।
पूर्वी हिंदी (बघेली): यह अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है। इसकी तीन मुख्य बोलियाँ हैं—अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी (ABC सूत्र)।
बिहारी हिंदी (मगही): यह मागधी अपभ्रंश से निकली है। इसमें भोजपुरी, मगही और मैथिली आती हैं।
राजस्थानी (मेवाती): यह भी शौरसेनी से प्रभावित है। मेवाती उत्तरी राजस्थान की मुख्य बोली है।
अतिरिक्त जानकारी (Additional Knowledge): 'मेवाती' को अहीरवाटी के करीब माना जाता है, जबकि 'बुंदेली' का क्षेत्र बुंदेलखंड (झांसी, ग्वालियर) है।

Q5. देवनागरी लिपि के सुधार हेतु 'सावरकर बंधुओं' ने किस सुझाव को दिया था?
(a) खड़ी पाई हटाना
(b) शिरोरेखा हटाना
(c) नुक्ता प्रयोग
(d) अ की बारहखड़ी
Ans.(d)

Sol. उत्तर: (d) अ की बारहखड़ी

व्याख्या:

भूमिका: देवनागरी लिपि में सुधार के लिए समय-समय पर विभिन्न विद्वानों और संस्थाओं ने प्रयास किए ताकि टाइपिंग और मुद्रण में सुगमता आए।

सूचना बूस्टर: सावरकर बंधुओं (विनायक दामोदर सावरकर और उनके भाई) ने 'अ' की बारहखड़ी का सुझाव दिया था। उनके अनुसार स्वर मात्राओं को अलग-अलग प्रतीकों के बजाय केवल 'अ' पर मात्रा लगाकर (जैसे आ, अि, अी, अु, अू...) लिखना चाहिए। इसका उद्देश्य टाइपराइटर के की-बोर्ड को छोटा और सरल बनाना था।

अतिरिक्त ज्ञान: महात्मा गांधी के संपादन में निकलने वाले 'हरिजन सेवक' में भी इस बारहखड़ी का प्रयोग कुछ समय तक किया गया था। हालांकि, नागरी प्रचारिणी सभा ने अंततः इसे स्वीकार नहीं किया क्योंकि इससे लिपि का मूल स्वरूप बिगड़ने का भय था।

Q6. 'साधारणीकरण' सिद्धांत का प्रतिपादन किस आचार्य ने किया?

(a) आचार्य विश्वनाथ

(b) भामह

(c) आनन्दवर्धन

(d) भरतमुनि

Ans.(d)

Sol. परिचय: साधारणीकरण भारतीय काव्यशास्त्र और नाट्यशास्त्र का एक मौलिक सिद्धांत है। यह रस की अनुभूति की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है।

सूचना बूस्टर:

साधारणीकरण सिद्धांत का प्रतिपादन आचार्य भरतमुनि ने अपने ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में किया था।

इस सिद्धांत के अनुसार, साहित्य या नाटक में चित्रित पात्रों और स्थितियों की व्यक्तिगत विशिष्टताएँ समाप्त हो जाती हैं और वे सामान्य रूप ग्रहण कर लेती हैं। इससे पाठक या दर्शक अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भूलकर उस सामान्यीकृत अनुभव में तद्रूप हो जाता है और रस की अनुभूति कर पाता है।

अतिरिक्त ज्ञान:

आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' ग्रंथ लिखा और रस को काव्य की आत्मा घोषित किया।

भामह को संस्कृत का प्रथम व्यवस्थित अलंकारशास्त्री माना जाता है।

आनन्दवर्धन ने 'ध्वनि सिद्धांत' का प्रतिपादन किया और 'ध्वन्यालोक' ग्रंथ लिखा।

Q7. अरस्तू के त्रासदी के सिद्धांत के अंगों का सही अनुक्रम है:

A. कथानक

B. चरित्र

C. विचार

D. पदयोजना

विकल्प:

(a) A,D,C,B

(b) A,B,D,C

(c) A,B,C,D

(d) A,C,B,D

Ans.(c)

Sol. परिचय (Introduction): यह प्रश्न यूनानी दार्शनिक अरस्तू द्वारा अपने ग्रंथ 'पोएटिक्स' में प्रतिपादित त्रासदी (Tragedy) के छह अवयवों के महत्व के क्रम से संबंधित है। अरस्तू ने इन अवयवों को उनके महत्व के आधार पर क्रमबद्ध किया था।

जानकारी बूस्टर (Information Booster):

अरस्तू के अनुसार त्रासदी के छह अवयव हैं और उनका महत्व का सही क्रम इस प्रकार है:

कथानक (Plot): अरस्तू के लिए त्रासदी का सबसे महत्वपूर्ण अंग कथानक है। यह घटनाओं का व्यवस्थित क्रम है जिसमें आरंभ, मध्य और अंत होता है।

चरित्र (Character): कथानक के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण अंग पात्रों का चरित्र-चित्रण है।

विचार (Thought): यह वह तत्व है जो पात्रों को किसी विशेष परिस्थिति में उचित तर्क या विचार प्रकट करने में सक्षम बनाता है।

पदयोजना (Diction): यह शब्दों का वह चुनाव और प्रयोग है जिसके माध्यम से विचार अभिव्यक्त होते हैं।

अतिरिक्त ज्ञान (Additional Knowledge):

अरस्तू के त्रासदी के छह अवयवों में शेष दो अवयव हैं - दृश्य (Spectacle) जो पांचवें स्थान पर है और संगीत (Song) जो छठे और अंतिम स्थान पर आता है।

अरस्तू का मानना था कि एक उत्कृष्ट त्रासदी दर्शकों के मन में 'दया' (Pity) और 'भय' (Fear) की भावनाएं जगाकर 'विरेचन' (Catharsis) की स्थिति उत्पन्न करती है।

Q8. भट्टनायक के अनुसार 'रस निष्पत्ति' की अंतिम स्थिति कौन-सी है?

(a) उत्पत्ति

(b) अनुमान

(c) अभिव्यक्ति

(d) भुक्ति

Ans.(d)

Sol. परिचय(Introduction): भट्टनायक का मत भुक्तिवाद या भोगवाद कहलाता है।

सूचना संवर्द्धक (Information Booster):

उन्होंने रस को आत्मानंद की भुक्ति कहा।

रस की निष्पत्ति के तीन व्यापार बताए — अभिधा, भावकत्व, भोजकत्व।

अंतिम स्थिति 'भोजकत्व' कहलाती है, जहाँ रस का पूर्ण आस्वादन होता है।

अतिरिक्त ज्ञान(Additional Knowledge):

भट्ट लोल्लट – उत्पत्तिवाद।

शंकुक – अनुमितिवाद।

अभिनवगुप्त – अभिव्यक्तिवाद।

Q9. इन पाश्चात्य आलोचकों को उनके जन्म-क्रम (प्राचीन → नवीन) में व्यवस्थित कीजिए —

A. वड्र्सवर्थ

B. कॉलरिज

C. मैथ्यू अर्नाल्ड

D. आई. ए. रिचड्र्स

सही विकल्प चुनिए:
(a) A → B → C → D
(b) B → A → C → D
(c) A → B → D → C
(d) B → A → D → C
Ans.(d)
Sol. परिचय :
पाश्चात्य साहित्यिक आलोचना के इतिहास में वड्र्सवर्थ, कॉलरिज, मैथ्यू अर्नाल्ड और आई.ए. रिचड्र्स का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इन चारों आलोचकों ने क्रमशः रोमांटिकतावाद, नैतिक सौंदर्यवाद और आधुनिक व्यावहारिक आलोचना की परंपराओं को विकसित किया।
जानकारी संवर्द्धक :
1. सैमुअल टेलर कॉलरिज (1772–1834)
0. जन्म के अनुसार सबसे पहले आते हैं।
0. वड्र्सवर्थ के सहचिंतक और अंग्रेज़ी रोमांटिक आंदोलन के दार्शनिक स्तंभ माने जाते हैं।
0. उनकी कृति Biographia Literaria में कविता और कल्पना पर गहन विश्लेषण मिलता है।
1. विलियम वड्र्सवर्थ (1770–1850)
1. कॉलरिज के समकालीन और रोमांटिक आंदोलन के काव्य-सिद्धांतकार।
1. Preface to Lyrical Ballads में उन्होंने कविता को "भावना का सहज विस्फोट" (Spontaneous overflow of powerful feelings) बताया।
1. मैथ्यू अर्नाल्ड (1822–1888)
2. विक्टोरियन युग के नैतिक आलोचक और सांस्कृतिक चिंतक।
2. उनकी रचना The Function of Criticism at the Present Time में आलोचना को संस्कृति के मार्गदर्शक बल के रूप में देखा गया।
1. आई.ए. रिचड्र्स (1893–1979)
3. 20वीं शताब्दी के प्रमुख नवआलोचक (New Critic) और व्यावहारिक आलोचना के प्रवर्तक।
3. उन्होंने Practical Criticism और Principles of Literary Criticism में विज्ञानसम्मत आलोचना पद्धति प्रस्तुत की।
अतिरिक्त ज्ञान :
1. कॉलरिज ने 'कल्पना' (Imagination) की अवधारणा दी, वड्र्सवर्थ ने 'काव्य-भाषा और भावनात्मकता' पर बल दिया, अर्नाल्ड ने 'साहित्य का नैतिक उद्देश्य' प्रतिपादित किया, और रिचड्र्स ने 'भाषा, अर्थ और मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया' को केन्द्र में रखा।
1. इन चारों की विचारधाराएँ आधुनिक आलोचना की नींव मानी जाती हैं।

Q10. कफन कहानी के संदर्भ में कौन से कथन संगत है?
A.बुधिया की मृत्यु पर जमींदार साहब ने घीसू को ₹2 दिए
B. गांव के बनिए महाजनों में दो आने, किसी ने चार आने से घीसू के पास कुल ₹5 हो गए
C. माधव की घरवाली रात को गुजर गई है कथन घीसु ने कही
D. माधव की पत्नी का नाम बुधिया है
(a) A, B, C और D सही
(b) A, B और C सही
(c) B, C और D सही

(d) A, D और E सही
(E). अनुत्तरित प्रश्न
Ans.(a)
Sol. कफन कहानी के संदर्भ में संगत कथन है- A, B, C और D सही
A.बुधिया की मृत्यु पर जमींदार साहब ने घीसू को ₹2 दिए
B. गांव के बनिए महाजनों में दो आने, किसी ने चार आने से घीसू के पास कुल ₹5 हो गए
C. माधव की घरवाली रात को गुजर गई है कथन घीसु ने कही
D. माधव की पत्नी का नाम बुधिया है
कफन -
यह कहानी प्रेमचंद जी की अंतिम कहानी है जो हिंदी की चाँद पत्रिका के अप्रैल 1936 अंक में प्रकाशित हुई
प्रेमचंद ने कफन कहानी से पहले उर्दू में लिखी थी जो उर्दू पत्रिका जामिया के दिसंबर 1935 अंक में छपी
यह प्रेमचंद जी की कहानी है
यह प्रेमचंद द्वारा रचित अंतिम कहानी संग्रह कफ़न में संकलित है इसमें 13 कहानियां संकलित है
इसमें प्रेमचंद ने मानव मन के अनेक दृश्य चेतना के अनेक छोरों,सामाजिक कुरीतियों तथा आर्थिक उत्पीड़न के विविध आयामों को संपूर्ण कलात्मक के साथ अनावृत किया है
यह आधुनिकता बोध की पहली कहानी है
कफन कहानी का प्रारम्भ झोपड़ी के द्वार परबाप और बेटा दोनों ही बुझे अलाप के सामने चुपचाप बैठे हैं और अंदर बेटे की जवान बीवी बुधीया प्रसव वेदना को पछाड़ खा रही है

Q11. अभिकथन (A): 'उसने कहा था' कहानी अपनी 'पूर्वदीप्ति' (Flashback) शैली के कारण हिंदी कहानी के इतिहास में मील का पत्थर मानी जाती है। तर्क (R): गुलेरी जी ने इसमें लहना सिंह के माध्यम से प्रेम, कर्तव्य और आत्म-बलिदान के अंतर्संबंधों को नई ऊँचाई दी है।
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, (R) सही है।
Ans.(a)
Sol. सही उत्तर: (a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
Introduction: चंद्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा 1915 में रचित 'उसने कहा था' आधुनिक हिंदी कहानी की पहली प्रौढ़ रचना मानी जाती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता इसकी 'फ्लैशबैक' तकनीक है, जिसमें वर्तमान की घटनाएँ पात्र को अतीत की स्मृतियों में ले जाती हैं।
Information Booster: अभिकथन (A) सही है क्योंकि शिल्प की दृष्टि से यह अपने समय से बहुत आगे की कहानी थी। तर्क (R) भी सही है क्योंकि कहानी का नायक लहना सिंह अपने बचपन के प्रेम (सूबेदारनी) को दिए गए वचन को निभाने के लिए युद्ध के मैदान में अपने प्राणों की आहुति दे देता है। यहाँ व्यक्तिगत प्रेम, सामूहिक कर्तव्य (सैनिक धर्म) में विलीन हो जाता है।
Additional Knowledge: यह कहानी अमृतसर के बाजारों से शुरू होकर प्रथम विश्वयुद्ध के मोर्चों तक पहुँचती है। लहना सिंह का चरित्र "वीरता" और "कोमलता" का अनूठा मिश्रण है। 'उसने कहा था' ने सिद्ध किया कि कहानी केवल किस्सागोई नहीं, बल्कि एक जटिल कलात्मक संरचना भी हो सकती है।

Q12. 'उसने कहा था' कहानी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

A. यह कहानी 1915 में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।
B. इसमें लहना सिंह 'सुबेदारनी' के प्रति अपने वचन को निभाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देता है।
C. यह कहानी प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है।
D. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे 'हिंदी की पहली अमर कहानी' माना है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(a) केवल A, B और D
(b) केवल B, C और D
(c) केवल A, C और D
(d) सभी A, B, C और D
Ans.(d)
Sol. सही उत्तर: (d) सभी A, B, C और D
विस्तृत व्याख्या:
प्रस्तावना: चंद्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' हिंदी कहानी के इतिहास का मील का पत्थर है। यह प्रेम, कर्तव्य और बलिदान के अद्भुत समन्वय की कहानी है।
नॉलेज बूस्टर: इस कहानी की सबसे बड़ी विशेषता इसका 'फ्लैशबैक' (पूर्वदीप्ति) शिल्प है। अमृतसर के बाजार से शुरू होकर बेल्जियम के युद्ध के मोर्चे तक की यह यात्रा लहना सिंह के चरित्र को उदात्त बनाती है। शुक्ल जी ने इस कहानी की प्रशंसा में कहा था कि "इसमें कहीं भी प्रेमी की निर्लज्जता या प्रगल्भता नहीं है।"
अतिरिक्त जानकारी: यह कहानी 'अकाल प्रेम' (Platonic Love) की पराकाष्ठा है। इसमें पंजाबी बोली का जो स्वाभाविक पुट मिलता है, वह आंचलिकता की नींव जैसा महसूस होता है। 'कीरत सिंह' और 'वजीरा सिंह' जैसे पात्र इस कहानी के वातावरण को यथार्थवादी बनाते हैं।

Q13. जयशंकर प्रसाद लिखित 'कामायनी' कितने सर्गों में विभाजित है?
विकल्प:
(a) 21
(b) 20
(c) 15
(d) 9
Ans.(c)
Sol. सही उत्तर: (C) 15
विस्तृत व्याख्या:
छायावाद का महाकाव्य 'कामायनी' (1935) 15 सर्गों में विभक्त है। ये सर्ग मानवीय चेतना के विकास के सोपान हैं: चिंता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन, रहस्य और आनंद। यह मानव मन के विकास की एक मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक यात्रा है।

Q14. मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में ' मैं कौनसे कथन सही है? A. मुक्तिबोध का कविता संग्रह 'चांद का मुंह टेढ़ा' में यह शामिल है B. यह संग्रह 1956 ई. में प्रकाशित हुआ C. यह कविता पहले 'आशंका के दीप अंधेरे' नाम से आई थी D. यह कविता फेंटेसी शैली में लिखी गई हिंदी की लंबी कविता है E. कविता में 'मैं' और 'वह' का साक्षात्कार दो बार होता है नीचे दिए गए विकल्प में सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) केवल A, B, C

(b) केवल A, C, D
(c) केवल B, C, D
(d) केवल B, D, E
Ans.(b)
Sol. Ans.(b)
Sol. मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में ' मैं सही कथन है - केवल A, C, D A. मुक्तिबोध का कविता संग्रह 'चांद का मुंह टेढ़ा' में यह शामिल है C. यह कविता पहले 'आशंका के दीप अंधेरे' नाम से आई थी D. यह कविता फेंटेसी शैली में लिखी गई हिंदी की लंबी कविता है अंधेरे में - यह कविता संग्रह 1964 ई. में प्रकाशित हुआ कविता अपनी काल परिस्थितियों का बोध कराती अपने समय की सशक्त रचनाओं का प्रमुख हस्ताक्षर है इस कविता के रचनाकाल 1957 - 1964 ई. के बीच रहा आजादी के बाद साठ - सत्तर के उस दौर में आम आदमी की आशा उम्मीद और उद्देश्य जैसे बिखर गए थे आजादी उसे एक झूठी थाली प्रतीत हुई जिसमें वही भ्रष्टाचार, शोषण और मूल्य हीनता परोस दी गई सत्ता पक्ष द्वारा व्यक्तियों की संस्थाओं पर हमले शुरू हो गए मुक्तिबोध स्वयं इसका शिकार हुआ और तब उनकी पुस्तक 'भारत इतिहास और संस्कृति' को मध्य प्रदेश सरकार के द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया मुक्तिबोध ने इस कविता में 'मैं' और 'वह' के माध्यम से अपने सहित संपूर्ण मध्यमवर्ग की अभिव्यक्ति को आवाज दी है 'मैं' और 'वह' कि व्यक्ति के मन के घटित दो रूपों का चित्रण है जहां 'मैं' काव्य नायक और 'वह' उसका प्रतिरूप है आठ खंडो में विभाजित संपूर्ण कविता में 'मैं' और 'वह' उद्वेलित करके जगाया रहता है कविता में 'मैं' और 'वह' का साक्षात्कार तीन बार होता है तीसरे खंड में टॉलस्टॉय विचित्र प्रोसेशन और सत्ता से हाथ मिला बैठे प्रकाण्ड आलोचक, विचारक, कवि, मंत्री, उद्योगपति आदि का जिक्र हुआ है चौथे खण्ड 'मैं' और 'वह' मध्यवर्ग पर व्यंग्य करते हुए आगाह करता है छठे खण्ड में काव्यनायक का तिलक पाषाण मूर्ति से साक्षात्कार होता है इसी खण्ड में महात्मा गांधी के आकार का कोई उसे एक शिशु सूरजमुखी फूल के गुच्छे में बदल जाता है छठे खंड में एक कलाकार शासन सत्ता द्वारा मार दिया गया था आठवे खंड में में अंतत: कवि क्रांति करवा देता है मुक्तिबोध की रचनाएं - भूल गलती, ब्रह्मराक्षस, अँधेरे में,चांद का मुंह टेढ़ा 1964 ई.

Q15. जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' रचना के सर्गो को उनके सही क्रम के अनुसार लगाइये :
A. ईर्ष्या
B. वासना
C. आशा
D. रहस्य
E. निर्वेद
नीचे दिए गए विकल्पों में सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) A, B, C, D, E
(b) C, B, A, E, D
(c) C, A, B, D, E
(d) B, C, A, E, D
Ans.(b)
Sol. Ans.(b)
Sol. जयशंकर प्रसाद की कामायनी रचना के सर्गो का सही क्रम है - C, B, A, E, D जयशंकर प्रसाद - इनकी कामायनी रचना का प्रकाशन वर्ष 1935 ई. है कामायनी में कुल 15 सर्ग है जिनका नामकरण मानसिक वृतियों के आधार पर हुआ इन मानसिक वृतियों का क्रम ऐसा रखा गया जैसे मनुष्य के विकास का होता है- चिंता 2. आशा 3. श्रद्धा 4. काम 5. वासना 6. लज्जा 7. कर्म 8. ईर्ष्या 9. इड़ा 10. स्वप्न 11. संघर्ष 12. निर्वेद 13. दर्शन 14. रहस्य 15. आनंद अपनी आधुनिक हिंदी साहित्य का सुप्रसिद्ध महाकाव्य ऋग्वेद एवं शतपथ ब्राह्मण में वर्णित जल प्लावन की कथा को आधार बनाकर प्रसाद ने मानव जीवन की विकास

यात्रा वर्णन किया है कामायनी शतपथ ब्राह्मण के आठवें अध्याय से ली गई है कामायनी महाकाव्य पर मंगला प्रसाद पारितोषिक मिला है कामायनी में प्रत्ययाभिज्ञान दर्शन की पुष्टि हुई है इसका उद्देश्य आनंदवाद की स्थापना करना है डॉ.नगेंद्र ने कामायनी को रूपक काव्य माना है नामवार सिंह के अनुसार कामायनी के सारे प्रतीक आधुनिक जीवन के लिए गए हैं न की पौराणिक व मिथकीय संदर्भों से इंद्रनाथ मदान 'कामायनी को एक असफल' कृति मानते हैं मुक्तिबोध के अनुसार कामायनी एक फेंटेसी है जयशंकर प्रसाद (1889 -1937 ई.) की रचनाएं - उर्वशी 1909 ई., वन मिलन 1909 ई., प्रेमराज्य 1909 ई., अयोध्या का उद्धार 1910 ई., शोकोच्छश्वास 1910 ई., वभ्रूवाहन 1911 ई., कानन कुसुम 1913 ई., प्रेम पथिक 1913 ई., महाराणा का महत्व 1914 ई., चित्राधार 1918 ई., झरना 1918 ई., आँसु 1925 ई., लहर 1933 ई., कामयनी 1935 ई.

Q16. 'गोदान' में आधुनिकता का सबसे सशक्त संकेत कौन-सा है?
(a) ग्रामीण जीवन
(b) पूँजीवादी शोषण
(c) स्त्री चेतना
(d) धार्मिक संघर्ष
Ans.(c)
Sol. सही उत्तर: (c) स्त्री चेतना
परिचय: प्रेमचंद का 'गोदान' (1936) केवल किसान की त्रासदी नहीं है, बल्कि यह बदलते हुए भारतीय समाज का दस्तावेज है। इसमें आधुनिकता का प्रवेश पात्रों के विचारों के माध्यम से दिखाया गया है।
इन्फॉर्मेशन बूस्टर: उपन्यास में 'मिस मालती' और 'गोबर की पत्नी झुनिया' के माध्यम से स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व और उसके अधिकारों की बात की गई है। मालती का पात्र पश्चिमी आधुनिकता और सेवा भाव के मेल को दर्शाता है, जो उस समय के लिए एक क्रांतिकारी संकेत था।
अतिरिक्त ज्ञान: आधुनिकता का एक अन्य पहलू 'शहरी और ग्रामीण जीवन का द्वंद्व' भी है, जहाँ राय साहब और खन्ना जैसे पात्र पूँजीवादी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

Q17. 'गोदान' उपन्यास में कौन-सा पात्र गांधीवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है?
(a) होरी
(b) रायसाहब
(c) झुनिया
(d) गोबर
Ans.(b)
Sol. Ans.(b)
Sol. 'गोदान' उपन्यास में रायसाहब पात्र गांधीवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है 'गोदान' में रायसाहब ही गांधीवादी विचारधारा का प्रतीक पात्र है, जो आदर्श, सेवा, और समाज-सुधार की चिंता करता है। रायसाहब – प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में रायसाहब एक ऐसा पात्र है जो गांधीवादी आदर्शों, जैसे – सादा जीवन सत्य और अहिंसा सामाजिक समानता और सेवा ग्राम्य को मानता और उसका प्रतिनिधित्व करता है। वह धनी होते हुए भी ग्रामीणों की चिंता करता है और उनके कल्याण के लिए कार्य करता है। राजनीतिक-आर्थिक विचारों में बदलाव लाने वाले पात्रों में से एक है। (a) होरी- होरी तो भारतीय किसान वर्ग का प्रतिनिधि है, जो संस्कार, गरीबी और सामाजिक दबाव में पिसता रहता है। वह गांधीवादी नहीं है, बल्कि वास्तविक संघर्षशील ग्रामीण है। (c) झुनिया- झुनिया सामाजिक विद्रोह और स्त्री संघर्ष का प्रतीक है। गांधीवाद से सीधा संबंध नहीं। (d) गोबर- गोबर में यथार्थवादी सोच है, वह शहर की ओर भागता है और नवजागरण के असर में जीता है, गांधीवाद से नहीं।

Q18. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध हजारी प्रसाद द्विवेदी के कौनसे निबंध संग्रह से लिया गया है?
(a) अशोक के फूल
(b) कल्पलता
(c) कुटज
(d) विचार और वितर्क
Ans.(b)
Sol. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध हजारी प्रसाद द्विवेदी के कल्पलता निबंध संग्रह से लिया गया
इसका प्रकाशन वर्ष 1951 ई. है
यह विचार प्रधान व्यक्तिनिष्ठ निबंध है
हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907 - 1979ई.) के निबंध –
अशोक के फूल (1948 ई.), कल्पलता 1951 ई., मध्यकालीन धर्म साधना 1952 ई., विचार और वितर्क 1957 ई., विचार प्रवाह 1959 ई., कुटज 1964 ई., साहित्य सहचर 1965 ई.

Q19. किस स्थान के लोग बड़े - बड़े नखों को पसंद करते थे?
(a) दक्षिणात्य
(b) स्थाणवीश्वर
(c) उज्जयिनी
(d) गौड़ देश
Ans.(d)
Sol. गोड़ देश के लोग बड़े-बड़े नखो को पसंद करते थे।
नाखून क्यों बढ़ते हैं
हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध है।
यह निबंध 1951 में प्रकाशित हुआ।
यह हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'कल्पलता' निबंध संग्रह से लिया गया है।
यह विचार प्रधान व्यक्ति निष्ठ निबंध है।
इसमें नाखून का बढ़ना पशुता का प्रतीक है और नाखून का काटना मानवता का प्रतीक माना गया है
हजारी प्रसाद द्विवेदी ललित निबंधकार है।
कल्पलता निबंध संग्रह में 20 निबंध संकलित है जैसे - आम फिर बोरा गए,ठाकुर जी का बटोर, वह चला गया, हम क्या करें, साहित्य ला नया कदम आदि।
नाखून क्यों बढ़ते हैं निबंध-
कुछ हजार साल पहले मनुष्य ने नाखून के सुकुमार विनोद के लिए उपयोग में लाना शुरू किया था।
वात्स्यायन के कामसूत्र से पता चलता है कि आज से 2000 वर्ष पहले का भारतवासी नाखूनों को जमके सवारता था।
उनको काटने की कला काफी मनोरंजन बताई गई है।
त्रिकोण, वर्तुल आकार, चंद्राकार, दंतुल आदि विभिन्न आकृतियों के नाखून इन दिनों बिलासी नागरिकों के द्वारा काटे जाते थे।
नखो को सिक्थक(मोम)और अलक्तक (आलता) से यतन पूर्वक रगड़ कर लाल और चिकना बनाया जाता था और गोड़ देश के लोग उन दिनों में बड़े-बड़े नखो को पसंद करते थे।
दक्षिणात्य लोग छोटी नखों को पसंद करते थे ।
हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रमुख निबंध संग्रह-

अशोक के फूल 1948, मध्यकालीन धर्म साधना 1952, विचार और वितर्क 1957,कुटज 1964 ,आलोक पर्व 1972 आदि
प्रमुख निबंध –
अशोक के फूल
बसंत आ गया है
मेरी जन्मभूमि
कुटज, देवदारू
नाखून क्यों बढ़ते हैं आदि।

Q20.रीति काल के किस कवि को 'साक्षात रसमूर्ति' कहा जाता है?
(a) मतिराम
(b) घनानंद
(c) देव
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
Ans.(a)
Sol. रीति काल के कवि घनानंद को 'साक्षात रसमूर्ति' कहा जाता है।
आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने घनानंद के काव्य में विरह की अनन्य गहराई और भावुकता को देखते हुए उन्हें इन विशेषणों से अलंकृत किया है:
साक्षात रसमूर्ति: शुक्ल जी के अनुसार, घनानंद का काव्य रस का साक्षात् स्वरूप है।
जवाबदानी का दावा: उन्हें अपनी अनुभूतियों को भाषा में उतारने का अनूठा सामर्थ्य प्राप्त था।
प्रेम की पीर के कवि: घनानंद को 'प्रेम की पीर' का कवि भी माना जाता है क्योंकि उनका विरह वर्णन अत्यंत मार्मिक और निजी है।
अन्य विकल्प-
मतिराम (a): इन्हें 'रीतिबद्ध' काव्यधारा का प्रमुख कवि माना जाता है और ये अपने 'ललितललाम' जैसे ग्रंथों के लिए प्रसिद्ध हैं।
देव (c): ये भी एक प्रभावशाली 'रीतिबद्ध' कवि थे, जिन्हें रस और अलंकार के सूक्ष्म विवेचन के लिए जाना जाता है।

Q21. "केशव को कवि हृदय नहीं मिला था" - यह कठोर आलोचनात्मक टिप्पणी किस इतिहासकार की है?
(a) डॉ. नगेन्द्र
(b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) मिश्रबंधु
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर (b) रामचन्द्र शुक्ल है।
आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में केशवदास की कठिन और क्लिष्ट भाषा शैली के कारण यह टिप्पणी की थी। शुक्ल जी का मानना था कि केशव में वह सहृदयता और भावुकता नहीं थी जो एक श्रेष्ठ कवि में होनी चाहिए।
उनके अनुसार:
केशव केवल चमत्कार प्रदर्शन और पांडित्य प्रदर्शन के पीछे भागते थे।
इसी कारण शुक्ल जी ने उन्हें "कठिन काव्य का प्रेत" भी कहा है।
अन्य विकल्प:

डॉ. नगेन्द्र: इन्होंने केशव को 'रीतिकाल का प्रवर्तक' माना है और उनके प्रति उदार दृष्टिकोण रखा है।
मित्रबंधु: इन्होंने 'मिश्रबंधु विनोद' में केशव को भाषा के आधार पर ऊँचा स्थान दिया है।

Q22. पद्माकर' की वह कौन-सी रचना है जो कलयुग के वर्णन से संबंधित है?
(a) कलि पच्चीसी
(b) जगतविनोद
(c) प्रबोध पचासा
(d) गंगा लहरी
Ans.(a)
Sol. पद्माकर की वह रचना जो कलयुग के वर्णन से संबंधित है, सही उत्तर (a) कलि पच्चीसी है।
पद्माकर रीतिकाल के अंतिम प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। उनकी रचना 'कलि पच्चीसी' में कलयुग के प्रभाव, सामाजिक गिरावट और नैतिक मूल्यों के ह्रास का चित्रण किया गया है। इसमें उन्होंने 25 छंदों के माध्यम से तत्कालीन समाज की अव्यवस्था और कलयुग के दोषों का वर्णन किया है।
अन्य विकल्पों का विश्लेषण:
(b) जगतविनोद: यह पद्माकर की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है। जयपुर नरेश जगत सिंह के संरक्षण में लिखी गई यह रचना 'नवरस' और 'नायिका भेद' का एक उत्कृष्ट ग्रंथ है। आचार्य शुक्ल ने इसे "रीति काल का सबसे लोकप्रिय ग्रंथ" माना है।
(c) प्रबोध पचासा: यह पद्माकर की वैराग्य और भक्ति से संबंधित रचना है। जीवन के अंतिम समय में जब वे शारीरिक व्याधियों से घिरे थे, तब उन्होंने संसार की नश्वरता को दर्शाते हुए इस ग्रंथ की रचना की थी।
(d) गंगा लहरी: यह पद्माकर की अंतिम रचना मानी जाती है। कहा जाता है कि जब उन्हें कुष्ठ रोग हो गया था, तब उन्होंने गंगा तट पर रहकर मुक्ति और स्वास्थ्य लाभ के लिए इसकी रचना की थी। इसकी भाषा अत्यंत प्रवाहपूर्ण और भक्तिमय है।
पद्माकर से जुड़े कठिन तथ्य :
1. कविराज शिरोमणि: जयपुर नरेश प्रताप सिंह ने पद्माकर को 'कविराज शिरोमणि' की उपाधि दी थी।
2. हिम्मत बहादुर विरुदावली: यह पद्माकर की वीर रस की प्रसिद्ध रचना है, जिसमें अनूप गिरि (हिम्मत बहादुर) के शौर्य का वर्णन है।
3. रामरसायन: यह वाल्मीकि रामायण का हिंदी पद्यानुवाद है।
4. पद्माभरण: यह पद्माकर का अलंकार निरूपक ग्रंथ है, जिसकी रचना उन्होंने ग्वालियर के शासक दौलतराव सिंधिया के दरबार में रहते हुए की थी।

Q23. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए (नाथ और उनके अन्य नाम):

सूची-I (नाथ)	सूची-II (अन्य नाम/प्रसिद्धि)
(A) मत्स्येंद्रनाथ	(1) बालनाथ
(B) जालंधरनाथ	(2) पूरण भगत
(C) चौरंगीनाथ	(3) मीननाथ
(D) गोरखनाथ	(4) शिव का अवतार

कूट (A) (B) (C) (D):
(a) 3 1 2 4
(b) 1 2 3 4
(c) 4 3 2 1
(d) 3 2 1 4

सही उत्तर: (a) 3 1 2 4

⍰ परिचय: नाथ परंपरा के गुरुओं को लोक साहित्य और योग साधना में विभिन्न नामों से जाना जाता है। मत्स्येंद्रनाथ गोरखनाथ के गुरु थे, जिन्हें 'मीननाथ' भी कहा जाता है क्योंकि पौराणिक कथाओं के अनुसार उन्होंने मछली के पेट में रहकर शिव से योग विद्या सीखी थी।

⍰ इन्फॉर्मेशन बूस्टर: जालंधरनाथ को 'बालनाथ' कहा जाता है; पंजाब में 'बालनाथ का टीला' उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है। चौरंगीनाथ को पंजाब की लोकगाथाओं में 'पूरण भगत' के नाम से जाना जाता है। गोरखनाथ को स्वयं साक्षात शिव का रूप माना जाता है, जिन्होंने योग मार्ग को पुनर्जीवित किया।

⍰ अतिरिक्त ज्ञान: इन नामों की विविधता यह दर्शाती है कि नाथ पंथ का प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों की स्थानीय संस्कृतियों में रच-बस गया था। यह संप्रदाय धर्म और जाति की सीमाओं को लांघकर लोक-चेतना का हिस्सा बन गया था।

Q24. 'पृथ्वीराज रासो' की प्रमाणिकता के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प 'अप्रामाणिक' मानने वाले विद्वानों का है?

(a) श्यामसुंदर दास, मिश्र बंधु, कर्नल टॉड

(b) रामचंद्र शुक्ल, कविराज श्यामलदान, गौरीशंकर हीराचंद ओझा

(c) मुनि जिन विजय, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सुनीति कुमार चटर्जी

(d) डॉ. दशरथ शर्मा, मथुरा प्रसाद दीक्षित

सही उत्तर: (b) रामचंद्र शुक्ल, कविराज श्यामलदान, गौरीशंकर हीराचंद ओझा

⍰ परिचय: पृथ्वीराज रासो की ऐतिहासिकता और प्रामाणिकता हिंदी साहित्य का सबसे बड़ा विवाद है। वूलर द्वारा 'पृथ्वीराज विजय' ग्रंथ खोजने के बाद रासो की तिथियों और घटनाओं पर सवाल उठे।

⍰ इन्फॉर्मेशन बूस्टर: आचार्य शुक्ल ने इसे "पूरी तरह जाली ग्रंथ" घोषित किया। ओझा जी और श्यामलदान ने इसे ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत पाकर अप्रामाणिक माना। इसके विपरीत, श्यामसुंदर दास और मिश्र बंधु इसे प्रामाणिक मानते हैं।

⍰ अतिरिक्त ज्ञान: हजारीप्रसाद द्विवेदी और सुनीति कुमार चटर्जी इसे 'अर्ध-प्रामाणिक' मानते हैं। द्विवेदी जी का तर्क है कि 'शुक-शुकी' संवाद वाले अंश ही मूल रचना हैं, बाकी बाद के प्रक्षेप हैं।

Q25. 'भारतेंदु युग' की प्रमुख प्रवृत्तियों में सम्मिलित है/हैं:

(a) राष्ट्रीयता और देश-प्रेम

(b) जन-चेतना का विकास

(c) समस्या-पूर्ति

(d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

Ans.(d)

Sol. सही उत्तर विकल्प (d) उपर्युक्त में से एक से अधिक है।

इस युग की कविता और गद्य में राष्ट्रीयता, समाज सुधार और पारंपरिक काव्य रूपों का अद्भुत संगम मिलता है। आपके द्वारा दिए गए तीनों विकल्प इस युग की मुख्य विशेषताएँ हैं:

राष्ट्रीयता और देश-प्रेम (A): भारतेंदु युग के कवियों ने देश की दुर्दशा पर क्षोभ प्रकट किया और जनता में स्वदेश-प्रेम की भावना जगाई। भारतेंदु जी की प्रसिद्ध पंक्तियाँ— "अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी, पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी"—इस प्रवृत्ति का सबसे बड़ा उदाहरण हैं।

जन-चेतना का विकास (B): इस काल को 'पुनर्जागरण काल' कहा जाता है। साहित्यकारों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, जैसे

छुआछूत, बाल-विवाह और विधवा-विवाह निषेध के विरुद्ध आवाज उठाकर जन-जन में सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता पैदा की।

समस्या-पूर्ति (C): यह इस युग की एक विशिष्ट काव्य-पद्धति थी। कवियों के जमघट में किसी दी गई पंक्ति (समस्या) को आधार बनाकर त्वरित कविता रचना की जाती थी, जिससे कवियों की प्रतिभा और आशु-कवित्व की जाँच होती थी।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण (Analysis of Other Options):

(d) उपर्युक्त में से एक से अधिक: यह सही उत्तर है क्योंकि विकल्प (A), (b) और (c) तीनों ही भारतेंदु युग की अनिवार्य प्रवृत्तियाँ हैं।

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं: यह गलत है क्योंकि सही विशेषताएँ विकल्पों में मौजूद हैं।

अतिरिक्त जानकारी (भारतेंदु युग की अन्य विशेषताएँ):

हास्य-व्यंग्य: समाज और प्रशासन की विसंगतियों पर करारी चोट।

भाषाई सरलता: गद्य के लिए खड़ी बोली और पद्य के लिए ब्रजभाषा का प्रयोग।

विविध विधाओं का उदय: नाटक, निबंध और पत्रकारिता का विकास इसी युग से आरंभ हुआ।

Q26. "तुम कनक किरन के अंतराल में, लुक-छिपकर चलते हो क्यों?" - यह पंक्ति किसकी है?

(a) सुमित्रानंदन पंत

(b) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(c) जयशंकर प्रसाद

(D).उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans.(c)

Sol. इसका सही उत्तर (c) जयशंकर प्रसाद है।

पंक्ति का विश्लेषण: यह प्रसिद्ध काव्य पंक्ति जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक 'चंद्रगुप्त' के एक गीत से ली गई है। इस गीत में प्राकृतिक सौंदर्य और मानवीय भावनाओं का सुंदर चित्रण मिलता है।

विकल्पों का संक्षिप्त परिचय:

(a) सुमित्रानंदन पंत: इन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। (रचनाएँ: पल्लव, वीणा आदि)

(b) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': ये छायावाद के क्रांतिकारी और ओजस्वी कवि माने जाते हैं। (रचनाएँ: सरोज स्मृति, राम की शक्ति पूजा आदि)

Q27. नई कविता के दौर में "मुक्तिबोध" की लंबी कविताओं को "अन्तःस्थल का विप्लव" किसने कहा है?

(a) शमशेर बहादुर सिंह

(b) नामवर सिंह

(c) रामविलास शर्मा

(d) उपर्युक्त में से एक से अधिक

(E). उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर (a) शमशेर बहादुर सिंह है।

मुक्तिबोध की कविताओं की जटिलता और उनके भीतर की बेचैनी को देखते हुए कवियों के कवि शमशेर बहादुर सिंह ने उनकी लंबी कविताओं (जैसे 'अंधेरे में') के लिए "अन्तःस्थल का विप्लव" शब्द का प्रयोग किया था।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण:

(b) नामवर सिंह: इन्होंने मुक्तिबोध की कविताओं को 'अस्मिता की खोज' (Search for Identity) कहा है।

(c) रामविलास शर्मा: इन्होंने मुक्तिबोध के काव्य को 'अंधेरे का काव्य' कहा था और उनकी कड़ी आलोचना भी की थी।
(d) और (E): चूंकि विकल्प (a) सटीक है, इसलिए ये लागू नहीं होते।

Q28. प्रयोगवाद के संबंध में कौन सा कथन असंगत है?
(a) यह व्यक्ति अनुभूति और समष्टि अनुभूति को एक ही सत्य के दो रूप मानता है
(b) यह मानता है कि विषयवस्तु की नवीनता ही उसके शिल्प को नया आकार देने के लिए बाध्य करेगी
(c) इसका मंतव्य समस्त परंपराओं का खंडन करके नए तत्वों का अन्वेषण करना है
(d) यह मानना है कि बौद्धिकता को काव्यानुभूति से पृथक करके नहीं देखा जा सकता
Ans.(c)
Sol. सही उत्तर: (c) इसका मंतव्य समस्त परंपराओं का खंडन करके नए तत्वों का अन्वेषण करना है
परिचय: प्रयोगवाद परंपराओं का अंधाधुंध विरोध या खंडन नहीं करता, बल्कि यह अनुभव के नए क्षेत्रों की खोज (अज्ञेय के अनुसार 'राहों के अन्वेषी') पर बल देता है।
इन्फॉर्मेशन बूस्टर: प्रयोगवाद का प्रारंभ 1943 में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' से माना जाता है। इसमें बौद्धिकता और वैयक्तिकता प्रधान होती है।
अतिरिक्त ज्ञान: अज्ञेय के अनुसार, "प्रयोग अपने आप में इष्ट (साध्य) नहीं है, वह साधन है।"

Q29. जन्मवर्ष के अनुसार अष्टछाप कवियों का क्रम बताइए:
A. कृष्णदास
B. चतुर्भुजदास
C. सूरदास
D. नन्ददास
(a) DCBA
(b) CBDA
(c) ACBD
(d) CABD
Ans.(d)
Sol. सही उत्तर: (d) CABD
परिचय: अष्टछाप की स्थापना 1565 ई. में विट्ठलनाथ ने की थी। इसमें चार शिष्य वल्लभाचार्य के और चार विट्ठलनाथ के थे।
इन्फॉर्मेशन बूस्टर: जन्म वर्ष के अनुसार क्रम:
1. सूरदास (1478)
2. कृष्णदास (1496)
3. चतुर्भुजदास (1530)
4. नन्ददास (1533)
अतिरिक्त ज्ञान: नन्ददास को उनकी काव्य कला के कारण 'जड़िया' कवि कहा जाता है ("और कवि गड़िया, नन्ददास जड़िया")।

Q30.प्रताप नारायाण मिश्र से संबंधित उपयुक्त कथन है:
A. प्रताप नारायण मिश्र का जन्म सन् 1852 ई. में चुनार, उत्तर प्रदेश में हुआ था।
B. संस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और बांग्ला में उनकी अच्छी गति थी।
C. उन्होंने 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका का संपादन किया।

D. दांत, भौं, आप, बात, धोखा, रिश्वत, बेगार, होती जैसे विषयों पर उन्होंने निबंध लिखे।
E. 'कलिकौतुक', 'भारत दुर्दशा', 'कलि प्रभाव' 'गो संकट' आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) केवल A, C, d
(b) केवल A, D, E
(c) केवल B, C, D
(d) केवल B, D, E
Ans.(d)
Sol. Answer:
(d)
Sol:
प्रताप नारायाण मिश्र से संबंधित उपयुक्त कथन है- केवल B, D, E B. संस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और बांग्ला में उनकी अच्छी गति थी। C. उन्होंने 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका का संपादन किया। D. दांत, भौं, आप, बात, धोखा, रिश्वत, बेगार, होती जैसे विषयों पर उन्होंने निबंध लिखे। E. 'कलिकौतुक', 'भारत दुर्दशा', 'कलि प्रभाव' 'गो संकट' आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। • प्रताप नारायण मिश्र का जन्म सन् 1852 ई. में चुनार, उत्तर प्रदेश में हुआ था। यह कथन गलत है क्योंकि प्रताप नारायण मिश्र का जन्म 1856 ई. में चुनार,उत्तर प्रदेश में हुआ • उन्होंने 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका का संपादन किया। यह कथन गलत है क्योंकि प्रताप नारायण मिश्र ने ब्राह्मण (1883 ई.)पत्रिका का संपादन कानपुर से किया था • हिंदी प्रदीप पत्रिका के संपादक बालकृष्ण भट्ट है प्रतापनारायण मिश्र (1856 - 1894 ई.)- • प्रताप लहरी इनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है • हास्य व्यंग्यात्मक कविताओं के क्षेत्र में प्रताप नारायण मिश्र का अग्रणी स्थान है • प्रेमघन की भांति इन्होंने भी लावणी शैली में अनेक कविताएं लिखी • इन्होंने हरगंगा, तृप्यताम, बुढ़ापा, हिंदी की हिमायत शीर्षक से महत्वपूर्ण कविताएं लिखी • इनकी मन की लहर कविता में बाल विधवाओ की करूण दशा का मार्मिक चित्रण हुआ है • इन्होंने देशभक्तिपरक कविताओं में व्यंग्य में अद्भुत मार्क शक्ति है • रचनाएं - प्रेम पुष्पांजलि, मन की लहर,लोकोक्ति शतक, श्रृंगार विलास, हरगंगा • निबंध - धोखा, दांत, बालक, वृद्ध, आप, बात, खुशामद, नारी,मनोयोग, समझदार की मौत, नास्तिक, ईश्वर की मूर्ति, घूरे का लता बिने, सोने का डंडा, कनातल के ढोल बांधे, अपव्यय,वृद्ध, दान